

8, 18, 19. वेदिम् AV. 7, 99, 1 (AV. Prāt. 2, 205). GOBH. 4, 7, 9. KAUC. 2. 22. 25. ङगत्परितस्तमामि परितस्तारिरे *bedecken* Çiç. 9, 18. LA. (III) 92, 15 (zugleich *ausbreiten*). *herumlegen, ausbreiten*: बर्हिः ÅÇV. GRU. 2, 5, 2. KAUC. 33. 116. मृगस्य त्वम् R. 3, 49, 9. कम्बलान्परितस्तारुः BHATT. 14, 11. — partic. °स्तीर्ण rings *bestreut, umlegt*: कुश° (Feuer) R. 4, 25, 28. अस्थिकेश° MBH. 11, 431. °स्तृत dass. JĀG. 1, 227. BHĀG. P. 5, 16, 28. — Vgl. परिस्तर u. s. w.

— प्र *hinstreuen, ausbreiten*: ein Fell ÇAT. Br. 12, 5, 2, 7. KAUC. 1. 87. पटम् HARIV. 9988. गिरः प्रतस्तार *ausschütten* so v. a. *sprechen* NAISH. 12, 87. प्रस्तृणतीरोषधीः *sich auseinanderlegend, — ausbreitend* AV. 8, 7, 4. — partic. प्रस्तीर्ण *hingestreut, ausgebreitet* ÇAT. Br. 1, 5, 2, 12. त्रिक्लप *flach* AV. Prāt. 1, 24. — Vgl. प्रस्तर u. s. w.

— अनुप्र *hinstreuen*: फलीकरणान् KAUC. 48.

— अभिप्र *ausstreuen* ÇAT. Br. 3, 9, 2, 13. 15. 24.

— उपप्र mod. *sich hinstrecken auf*: इयं महां प्र स्तृणीते मनुषोप व-
र्त्तिरृच्छं RV. 6, 67, 2.

— वि *ausstreuen, ausbreiten*: बर्हिः RV. 3, 4, 5. 7, 17, 1. विस्तृप्य पत्नी *die Flügel ausbreitend* R. 5, 3, 60. *verbreiten*: विस्तृणीहि यशो भुवि BHĀG. P. 3, 24, 15. विस्तार्यते यशो लोके M. 7, 33. PĀNĀT. 71, 19. *sich weitläufig auslassen über* (acc.): विस्तार्यतन्महत्ज्ञानमृषिः संतिप्य चा-
ब्रवीत् MBH. 1, 51. ब्रूहि विस्तार्य Z. d. d. m. G. 6, 94. तस्यानुचरितमुत्तर-
स्माद्विस्तरिष्यते (pass.) BHĀG. P. 5, 24, 27. कथं सदस्यैर्वचनं विस्तरयुः
so v. a. *Worte wechseln, sich unterreden mit* MBH. 3, 16042. — partic.

1) विस्तार्या a) *bestreut*: कुशैः R. 2, 100, 18. ÇĀK. 83, v. l. *besetzt mit* KATHĀS. 72, 37. — b) *ausgebreitet, entfaltet*: जाल Hit. 9, 14. ein Heer KATHĀS. 46, 45. fg. परितप्रकायाः ÇĀK. 75, v. l. — c) *breit, umfangreich* H. 1430. HALĀJ. 4, 14. KAUC. 90. MBH. 3, 1819. 1826. 2511. 5, 7130. HARIV. 2902. 10612. R. 1, 1, 70. 5, 7. 43, 7 (सु°). 2, 75, 15. R. GORR. 2, 123, 15. 3, 38, 18. 4, 2, 15. 5, 13, 14. 6, 92, 62. SUÇR. 1, 126, 10. 2, 338, 14. VARĀH. BRH. S. 49, 2. 4. 33, 65. 56, 12. fgg. 58, 4. fgg. 67, 7. 68, 21. 85. KATHĀS. 12, 15. 43, 221. RĀGĀ-TAR. 4, 163. 594. MĀRK. P. 54, 15. BHĀG. P. 3, 19, 15. 4, 24, 20. PĀNĀT. 51, 20. 245, 25. HIT. 79, 13 (सु°). सदस् so v. a. *zahlreich* MBH. 1, 9. चम्, बल R. 2, 113, 20. 3, 42, 19. विद्युतः 5, 86, 4. गुणाः 84, 4. श्री *ein grosses Vermögen* KATHĀS. 54, 210. ऐश्वर्यं सुवि-
स्तार्यो *weit ausgebreitet* Spr. (II) 1489. कुल R. GORR. 2, 23, 7. यशम् MBH. 1, 3542. व्यवसाय Spr. (II) 6240. °विषयत् ÇĀM. zu BRH. ÅH. UP. S. 284. प्रासादभोगविस्तीर्णः स्तुतिशब्दः *weithin erschallend* R. 2, 65, 3. कथा *ausführlich* MBH. 12, 12711. कृषविस्तीर्णया वाचा R. 4, 63, 7. 11. ग्रन्थाः RĀGĀ-TAR. 1, 11. SARVADARÇANAS. 56, 10. सुविस्तीर्णम् *recht aus-
führlich* Verz. d. Oxf. H. 25, b, 19. — 2) विस्तृत a) *überzogen, bedeckt mit*: वर्चःशाद्वल° RĀGĀ-TAR. 6, 120. *versehen mit* BHĀG. P. 4, 29, 74. — b) *ausgebreitet, ausgestreckt* AK. 3, 2, 35. पाणी विस्तृताङ्गुली 2, 6, 2, 35. सेनायाः विस्तृतायाः समन्ततः R. GORR. 2, 91, 2. चकार ह्यं प्लवनाय वि-
स्तृतम् 5, 2, 46. आकाशमिव विस्तृतम् BHĀG. P. 4, 24, 60. ततो बालेन ते-
नास्यं सकृदा विस्तृतं (विवृतं ed. Bomb.) कृतम् *weit geöffnet* MBH. 3, 12905. DHŪRTAS. 67, 9. प्राज्ञातविस्तृतनिज्ञाधमकर्मवृत्ति so v. a. *entfaltet* Spr. (II) 1241. सर्गमविस्तृतम् BHĀG. P. 3, 12, 49. — c) *breit, umfangreich*: द्विषो जनायता वापो विस्तृता चापि योजनम् MBH. 3, 12762. त्रिंशद्योजन-

विस्तृता पुरी R. 3, 33, 38. SUÇR. 1, 123, 15. VARĀH. BRH. S. 58, 5. 73, 3. MĀRK. P. 54, 16. BHĀG. P. 3, 11, 39. 8, 2, 2. NALOD. 3, 14. नाद *weithin schallend* HARIV. 14373. विस्तृतम् *ausführlich* ÇATR. 1, 288. BHĀG. P. 10, 1, 12. — Vgl. विष्टर, विष्टार, विष्टिर, विस्तर, विस्तार, विस्तृत, बङ्ग-
विस्तीर्ण. — caus. विस्तारयति *ausbreiten*: बलम् M. 7, 188. संस्तान्यो-
धयेदल्पान्कामं विस्तारयेद्बहून् 191 = MBH. 6, 698 (fehlerhaft *विस्तर-
येत्* ed. Calc.). बडिशम् Spr. (II) 6237. (रेणुः) विस्तारितः कुञ्जरकर्णतलैः
RAGH. 7, 36. चितानलम् KATHĀS. 18, 147. PĀNĀT. 171, 3. वंशं तीणाम् HA-
RIV. 4376. *verbreiten*: वेदम् MBH. 12, 12355. परगुणान् Spr. (II) 4332. यशः MĀRK. P. 21, 92. *entfalten*: लक्ष्मीम् Spr. (II) 1162. *sich ausführlich
auslassen über* (acc.) KULL. zu M. 10, 31. वद विस्तार्य *ausführlich* Verz.
d. Oxf. H. 26, b, 14.

— अतिवि, partic. °स्तीर्ण *überaus umfangreich, — intensiv*: शोभा.
काति SĀH. D. 32, 8. 10.

— अनुवि, partic. °स्तृत *breit, umfangreich*: दशनत्त्वानु° (शरीर) R.
6, 92, 62.

— प्रावि s. प्रविस्तर fg.

— सम् 1) (*nebeneinander*) *hinstreuen, ausbreiten*: कृत्वाग्निं च पुष्क-
रपुष्पं च TS. 5, 1, 2, 3. ÇAT. Br. 1, 9, 2, 24. कुशान् 14, 1, 2, 1. अन्नानि
MBH. 1, 7163. तृणानि R. GORR. 2, 83, 26. *bestreuen, bedecken*: नवेस्तृणी-
रगारम् KAUSH. UP. 2, 15. SUÇR. 1, 6, 15. रत्नैः सभाम् MBH. 2, 1774. तेषां
शरीरैः संतस्तार भूमिम् 7, 1560. शय्यां दर्भैः 2776. मानवैः संस्तरन्महीम्
3395. — 2) *ausbreiten* so v. a. *einebnen*: आयतनम् KAUC. 16. अदेवनम्
41. — partic. 1) संस्तीर्ण *hingestreut* KAUC. 2. ÇĀK. 83. *bestreut, bedeckt,
belegt*: पुष्पितैः किष्कुः पर्वतः MBH. 6, 4600. तेन भापडेन राजनिवेशनम्
R. 2, 78, 18. दिव्यास्तरण° MBH. 3, 1819. अजिनोत्तर° R. 2, 88, 4 (96, 5
GORR.). — 2) संस्तृत *bestreut*: पुष्पसंस्तर° MBH. 1, 2863. तृण° R. GORR.
2, 96, 2. — Vgl. संस्तर fg., संस्तार, संस्तिर.

— अभिसम्, partic. अभिसंस्तीर्ण *bestreut, bedeckt mit* (instr.) MBH.
12, 7613.

— परिसम् *an verschiedenen Orten anlegen* (Feuer): अथोत्प वेदा-
न्यपरिसंस्तीर्य चाग्निनिष्ठा यज्ञैः पालयित्वा प्रज्ञाय MBH. 5, 1558.

2. स्तर (= 1. स्तर) 1) Stern (*ausgestreut am Himmel*), im Veda
nur im instr. pl. erhalten NAISH. 3, 29. NĪR. 3, 20. RV. 1, 68, 5. 166, 11.
2, 2, 5. द्यावा न स्तृभिश्चितयत्त खादिनः 34, 2. 4, 7, 3. स्तृभिर्न्या पिपिज्ञे
सूरी अन्त्या 6, 49, 3. 12. स्तृणाम् (soll nom. pl. sein!) WEBER, GJOT. 32. स्तृ-
णाम् 89, 93 (v. l. स्त्रीणाम्). im comp. स्त्रि (wohl स्तृ zu lesen) ebend. und
110. Vgl. 2. तर. — 2) Blässe (am Rind) RV. 1, 87, 1; vgl. 1. उन्न.

3. स्तर, स्तृणीति (प्रीतिपालनयोः), प्राणने DHĀTUP. 27, 13, v. l. für स्पर्.
स्तर (von 1. स्तर) s. स्वस्तर.

स्तरण (wie eben) n. *das Ausbreiten, Hinstreuen*: वेद° ÅÇV. ÇR. 3, 6.
23 (vgl. 1, 11, 9). der Opferstreu KĀTJ. ÇR. 1, 7, 10. 2, 6, 38. 5, 6, 14. वेदेः
8, 6, 29. KAUC. 137. *das Bekleiden der Wand* (nach Comm.) ÅÇV. ÇR. 2, 3, 3.

स्तरिमन् (wie eben) UNĀDIS. 4, 147. m. Lager, Bett UGÉVAL.

स्तरी UNĀDIS. 3, 158. f. (nom. स्तरीम्) 1) *die Unfruchtbare, Nicht-
trächtige, namentlich Kuh, Stärke*: स्तये गाम् RV. 1, 116, 22. 117, 20.
7, 23, 4. 68, 8. स्तरीहं तद्वति सूतं उ बत् 101, 3. स्तरीर्यतूतं 10, 31.
10. VĀLAKH. 3, 7. RV. 1, 122, 2. न स्तरीं रात्रिं वसति *keine unfrucht-*